भारत की प्रसिद्ध नदियों की संक्षिप्त जानकारी

प्रदीप कुमार
रा.ज.सं.,रूड़की

भारत की ही नहीं अपितु विश्व की प्राचीनतम सभ्यताएं नदियों के किनारे ही विकसित हुई हैं संभवतः इसी कारण आदिकाल से ही भारतीय ग्रंथों में नदियों को पूजनीय स्थान मिलता रहा है। धार्मिक दृष्टि से नदियों को मोक्षदायिनी तथा पुण्य सलिला माना जाता है। नदियों की इस सांस्कृतिक गरिमा के मूल में वस्तुतः जीवन के लिए जल की आवश्यकता की अनिवार्यता ही है। अतः जीवन के लिए परम आवश्यक प्राकृतिक उपादानों में वायु के बाद जल का ही स्थान है।

सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य ने जहां कहीं पानी देखा वहीं अपनी बस्ती बनाई। हमारे देश की नदियों ने अपने जल के द्वारा मानव का काफी कल्याण किया है। किसी समय में हमारे देश के अधिकांश भागों की धरती उपजाऊ नहीं थी, क्योंकि सिंचाई की सुविधा नहीं थी। लेकिन अनेक ऋषि–मुनियों ने लोक कल्याण के लिए तय किया। उनकी तपस्या का ही परिणाम है कि गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा चंबल और कावेरी जैसी नदियों का उद्‌गम हमारे देश में हुआ और इन नदियों ने अपने–अपने क्षेत्र की भूमि को उपजाऊ बनाया। इन नदियों पर बाँध बनाकर पानी को विशाल जलाशयों में एकत्र करके बड़े पैमाने पर बिजली पैदा की जा रही है जिसका उपयोग कल–कारखानों और अन्य कामों में किया जा रहा है।

भारत की प्रसिद्ध नदियाँ

1. **अलकनंदा नदी** – यह गंगा नदी की सहयोगी नदी है। यह उत्तराखंड में गंगोत्री नामक स्थान से निकलती है। देवप्रयाग में अलकनंदा और भागीरथी का संगम होता है और इसके बाद अलकनंदा नाम समाप्त होकर केवल गंगा नाम रह जाता है।

2. **इंद्रावती नदी** – यह मध्य भारत की एक बड़ी नदी है। इसका उद्‌गम स्थान उड़ीसा के कालाहान्डी जिले के रामपुर थूयामूल में है। यह प्रमुख रूप से छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर दन्तेवाड़ा जिले में प्रवाहित होती है। दन्तेवाड़ा जिले के भद्रकाली में इंद्रावती नदी का गोदावरी नदी में संगम होता है।

3. **कालिंदी नदी** – कालिंदी यमुना नदी का ही दूसरा नाम है। कालिंद पर्वत से निकलने के कारण इसका नाम कालिंदी पड़ा।

4. **काली नदी (उत्तराखण्ड)** – इस नदी का उद्‌गम स्थान उत्तराखंड राज्य के पिथौरागढ़ जिले में है। यह नदी नेपाल के साथ भारत की निरंतर पूर्वी सीमा बनाती है यह नदी उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के मैदानी क्षेत्रों में पहुँचने पर शारदा नदी के नाम से भी जानी जाती है। यह नदी जौल्जिबि नामक स्थान पर गोरी नदी से मिलती है तथा आगे चलकर कर्नाली नदी से मिलती है और बहराइच जिले में पहुँचने पर इसे एक नया नाम मिलता है, सरयु और आगे चलकर यह गंगा में मिल जाती है।

5. **काली नदी (कर्नाटक)** – इस नदी का उद्‌गम स्थल पश्चिमी घाट में है और यह पश्चिम की ओर बहती हुई करवर नामक कस्बे के निकट अरब सागर में मिल जाती है।

6. **कमला नदी** – यह नदी हिमालय की महाभारत श्रेणी से निकली है। नेपाल से निकलकर यह नदी दक्षिण की ओर बहती है। नेपाल के तराई क्षेत्रों से होती हुई यह बिहार में प्रवेश कर बलान नदी के साथ बहती है। यह दरभंगा और सहरसा जिले की सीमा रेखा बनाती हुई अंत में कोसी नदी में मिल जाती है।

7. **कावेरी नदी** – कावेरी नदी कर्नाटक तथा उत्तरी तमिनाडु में बहने वाली नदी है। इसे दक्षिण की गंगा भी कहा जाता है। इसका उद्‌गम ब्रह्मागिरि पर्वत से हुआ है। पूरी यात्रा के दौरान कावेरी में छोटी–बड़ी कुल 70 नदियों का विलेय हो जाता है। दक्षिण–पूर्व में प्रवाहित होकर कावेरी नदी बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है।

8. **कोयना नदी** – महाराष्ट्र के पश्चिमी तट के आस–पास की ऊँची–ऊँची पहाड़ियों का सहयाद्रि के नाम से जाना जाता है। इन पहाड़ियों की ढलानों से कोयना नदी निकलती है। इस नदी का क्षेत्र महाराष्ट्र के सतारा जिले में, कृष्णा बेसिन से ऊपर की ओर पश्चिमी घाट में है। पश्चिमी घाट की तलहटी में देशमुखवादी नामक स्थान पर बांध बनाकर एक जलाशय बनाया गया। इस परियोजना के विकसित होने के पहले कोयना नदी का जल कृष्णा नदी में मिलकर बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाता है, किन्तु वर्तमान में कोयना का जल अरब सागर में जा रहा है।

9. **कोसी नदी** – यह नदी नेपाल में हिमालय से निकलती है। नेपाल के पूर्वी भाग में एक क्षेत्र ''सप्त कौषिकी'' है। हिमालय से निकलने वाली सात नदियाँ सुत कोसी, तांबा कोसी, दूध कोसी, तलखू, भोटिया कोसी, तांबर और अरूण इस क्षेत्र से होकर बहती हैं। इन सभी के मिलने कोसी से नदी बनी है। यहां से कोसी नेपाल से निकलकर भारत में बिहार में घुसती है। इसकी सहायक नदियां एवरेस्ट के चारों ओर से आकर मिलती हैं। भीमनगर के निकट भारतीय सीमा में प्रवेश कर दक्षिण की ओर चलकर कुरसेला के पास गंगा में मिल जाती है।

10. **कृष्णा नदी**– भारत के दक्षिणी मध्य भाग में अनेक पहाडियां हैं। इनमें महाबलेश्वर की पर्वतीय श्रृंखला में सबसे अधिक ऊँची पहाड़ी 'ब्रह्मागिरि' से कृष्णा नदी का उद्‌गम हुआ है। अपने उद्‌गम से कृष्णा की धारा अपनी उपनदियों तुंगभद्रा, घाटप्रभा, कोयना और भीमा की धाराओं को अपने में विलीन कर दक्षिण–पूर्व में बहती हुई विजयवाड़ा के बाद बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाती है।

11. **केन नदी** – यह नदी जबलपुर, मध्यप्रदेश से प्रारम्भ होती है पन्ना में इसमें कई धारायें आ जुड़ती हैं। यह यमुना की सहायक नदी है जो बुन्देलखंड क्षेत्र से गुजरती है और बाँदा उत्तर प्रदेश में इसका यमुना से संगम होता हैं।

12. **गंगा नदी** – यह भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी है। इसकी प्रधान शाखा भागीरथी है जो हिमालय के गोमुख नामक स्थान पर गंगोत्री हिमनद से निकलती है। भागीरथी व अलकनंदा देव प्रयाग में संगम करती है। यहां से यह सम्मिलित जल धारा गंगा नदी के नाम से प्रवाहित होती हुई पहाड़ी रास्ता तय करके ऋषिकेश होते हुए मैदानों का स्पर्श हरिद्वार में करती है। हरिद्वार से मैदानी यात्रा करती हुई इलाहाबाद (प्रयाग) पहुँचती है। प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती नामक तीन नदियों का संगम है। इलाहाबाद से गंगा पूरब की ओर बहती हुई हिंदु धर्म की मोक्षदायिनी नगरी काशी (वाराणसी) पहुँचती है। वाराणसी से गंगा उत्तर–पश्चिम की ओर बहती हुई बिहार राज्य में प्रवेश कर जाती है। बिहार से गंगा पश्चिम बंगाल की सीमा में प्रवेश कर जाती है। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में गंगा नदी दो शाखाओं भागीरथी और

पद्मा में विभाजित हो जाती है। भगीरथी दक्षिण की ओर तथा पद्मा दक्षिण पूर्व की ओर बहती हुई बंग्लादेश में प्रवेश करती है। मुर्शिदाबाद से हुगली शहर तक गंगा का नाम भागीरथी नदी तथा हुगली शहर से मुहाने तक गंगा का नाम हुगली नदी है। हुगली नदी कोलकाता हावड़ा होते हुए सुंदरवन के भारतीय भाग में सागर से संगम करती है। पद्मा में ब्रह्मपुत्र से निकली शाखा नदी जमुना नदी एवं मेघना नदी मिलती हैं। अंततः ये सुन्दरवन डेल्टा में जाकर बंगाल की खाड़ी में सागर में संगम करती है।

13. **गंडक नदी** – गंडक नदी का उद्गम धौलागिरि के उत्तर–पूर्व में है। धौलागिरि नेपाल ओर तिब्बत सीमा के करीब है। यह नेपाल की सीमा से भारत की सीमा में प्रवेश करने पर यह उत्तर प्रदेश और बिहार की सीमा रेखा बनाती हुई बहती है। यह पटना के निकट गंगा नदी में मिल जाती है।

    बुढ़ी गंडक भी गंडक की तरह ही एक नदी है यह सोमेश्वर की पहाड़ियों से निकली हुई है। यह उत्तर बिहार से बहती हुई उत्तर पश्चिमी क्षेत्र चंपारण में गंडक के बिल्कुल समानांतर प्रवाहित होती हैं। यह मुगेर के पूर्वोत्तर में गंगा में मिल जाती है।

14. **गोदावरी नदी** – यह महाराष्ट्र के नासिक जिले से निकली है। इसकी उत्पत्ति पश्चिम घाट की पर्वत श्रेणी के अंतर्गत त्रयंबक पर्वत से हुई है। त्रयंबक पर्वत के सिरे पर एक गोमुख हैं जहां से गोदावरी एक जलकुंड में से द्रवित हुई हैं। इस नदी का पाट बहुत बडा है यह अधिकांशतः पहाडी रास्तें से होकर प्रवाहित हुई है। गोदावरी की एक मुख्य धारा गोतमी येनम नामक स्थान पर समुद्र में विलीन हो जाती है। दूसरी मुख्य धारा नरसापुर में और तीसरी मुख्य धारा (वैष्णव) नागरा के पास समुद्र में जा गिरती है।

15. **गोमती नदी** – गोमती उत्तर भारत में बहने वाली नदी है। इसका उद्गम पीलीभीत जनपद के माधोटान्डा कस्बे से होता है। कस्बे के मध्य से 1 कि.मी. दक्षिण–पश्चिम में एक ताल है जिसे गोमत ताल कहते है। वही इस नदी का स्रोत है। यह नदी उत्तर–प्रदेश में वाराणसी के निकट सैदपुर के पास गंगा में मिल जाती है।

16. **घाघरा नदी** – यह नदी मानसरोवर झील के पास हिमालय के ऊँचें पर्वत शिखरों से निकलती है। आरंभ में दक्षिण–पूर्व दिशा में बहती हुई नेपाल सीमा में प्रवेश कर जाती है। मैदानी भागों में पहुँचने के बाद घाघरा कई शाखाओं में विभाजित हो जाती है। इसकी दो मुख्य शाखाएं कोरियाला और गिरबा उत्तर प्रदेश की सीमा में बहराइच पहुँच कर भरतपुर में आपस में मिल जाती है। गलेरिया के पास इसमें सरयू का भी विलेय हो जाता है। रामपर के पास कोकरयाला में शारदा नदी मिल जाती है। शारदा नदी के मिलने के बाद ही इसका नाम घाघरा पड़ा है। उत्तर–प्रदेश और बिहार की सीमा रेखा बनाती हुई घाघरा छपरा पहुँचकर गंगा में मिल जाती है।

17. **चंबल नदी** – इसका उद्गम स्थल 'जनापाव' मध्य प्रदेश है। यह दक्षिण महू शहर के, इंदौर के पास, विंध्य रेज के मध्य प्रदेश में दक्षिण ढ़लान से होकर गुजरती है। चंबल मध्य प्रदेश में पहाड़ से उतरने के बाद शिप्रा नदी से मिलती है। राजस्थान की सीमा में पहुँचने पर चंबल खुद को गौरवांन्वित महसूस करती है तथा यहाँ से बहने के बाद पुनः मध्य प्रदेश में प्रवेश कर जाती है। चंबल मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा रेखा बनाती हुई उत्तर–प्रदेश में प्रवेश करती है। इटावा जिले में 'साहन' नामक स्थान के पास उसका विलेय यमुना में हो जाता है।

18. **चेनाब नदी** – हिमाचल–प्रदेश में लाहौल के करीब से दो नदियाँ निकली हुई है – एक का नाम 'चंदा' और दूसरी का नाम 'भागा' है। इन दो धाराओं से ही चेनाब नदी का जन्म हुआ है। चेनाब पांगी घाटी से बहती हुई दक्षिण कश्मीर के पर्वतीय क्षेत्र में प्रवेश कर जाती है। अखनूर सेक्टर से आगे पाकिस्तान की सीमा में पहुँचने से पहले 'तवी नदी' आकर इसमें मिल जाती है। पाकिस्तान में ये पंजनद पहुँचती है। यहाँ यह झेलम और रावी के जल को लेकर सतलुज नदी में मिल जाती है।

19. **झेलम नदी** – इस नदी का उद्‌गम स्थल कश्मीर घाटी में स्थित 'बेरीनाग' में है। वितस्ता इसका वास्तविक नाम है। यह भारत और पकिस्तान के मध्य बहती है। यह पाकिस्तान में –'तिरमू' के करीब चेनाब नदी में गिर जाती है।

20. **तवा नदी** – तवा नदी मध्य भारत की नर्मदा नदी की सहायक नदी है। यह बेतुल की सतपुड़ा रेंज से निकलकर उत्तर–पश्चिम की ओर बहती है। यह होशंगाबाद जिले के बांद्राभान गांव में नर्मदा में विलेय हो जाती है।

21. **ताप्ती नदी** – इस नदी का उद्‌गम मध्य प्रदेश के बेतूल जिले में है। खुले तथा उपजाऊ मैदानी भागों से होकर यह सतपुड़ा की पहाडियों में प्रवेश करती है। इसके बाद यह महाराष्ट्र के खानदेश में पहुँचती है खानदेश के बाई ओर से पूर्णा नदी इसमें आकर मिल जाती है। यह नदी पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। सूरत बंदरगाह इसी नदी के मुहाने पर स्थित है। गुजरात में यह सूरत से आगे निकलकर अरब सागर में जा गिरती है।

22. **तुंगभद्रा नदी** – कर्नाटक राज्य के दक्षिण कनारा और शिगोमा जिलों की सीमा पर पश्चिम घाट के 'वराहगिरि' से दो नदियां निकलती है। एक का नाम तुंगा और दूसरी का नाम भद्रा है। इन दोनों के संगम से ही तुंगभद्रा बनी हैं। यह उत्तर पूर्व की ओर बहती हुई आंध्रप्रदेश में महबूब नगर जिले में गोंडिमल्ला में जाकर ये कृष्णा नदी में मिल जाती है।

23. **तिस्ता नदी** – उत्तरी सिक्किम के हिमालय श्रृंग में तिस्ता नदी का उद्‌गम हैं। तिस्ता नदी सिक्किम और पश्चिमी बंगाल से बहती हुई बंग्लादेश में प्रवेश करती है यहां रंगपुर के निकट ब्रह्मपुत्र नदी में इसका विलेय हो जाता है।

24. **तोरसा नदी** – इस नदी का उद्‌गम तिब्बत की चंबी घाटी में है। तिब्बत के क्षेत्रों से बहती हुई यह भूटान में प्रवेश करती है। फिर पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले में प्रवेश करती है। उत्तरी बंगाल के कूचविहार क्षेत्र में बहने के बाद इसका विलेय ब्रह्मपुत्र नदी में हो जाता है।

25. **टॉंस नदी** – कर्मनाशा नदी तथा रूपिन नदी मिल करके टोंस नदी बनाती है। यह यमुना की सहायक नदी है। यह दून घाटी से निकलती है तथा कालसी में यमुना नदी में मिल जाती है।

26. **दामोदर नदी** – यह नदी झारखंड राज्य के छोटा नागपुर पठार से निकली है। यह नदी अपने उद्‌गम से निकलकर जंगलों के बीच बहती हुई हजारी बाग पहुँचती है। यह बिहार के प्रसिद्ध कोयला क्षेत्र धनबाद से होकर बहती है। वहां से इसकी धारा दक्षिण–पूर्व की ओर मुड़ जाती है। फिर इसका प्रवेश पश्चिम बंगाल के वर्दमान जिले

में होता है। आगे यह हावडा के करीब से बहती हुई हुगली नदी में मिलकर बंगाल की खाडी में पहुँच जाती हैं।

27. **द्वारिका नदी** – यह नदी वीर भूमि पहाड़ी से निकलती है। इसकी प्रमुख सहायक नदी 'मयूराक्षी' है। द्वारिका पश्चिम बंगाल से होकर बहती है और मुर्शिदाबाद जिले में इसका विलेय गंगा नदी में हो जाता है।

28. **नर्मदा नदी** – नर्मदा मध्य भारत के विंध्याचल और सतपुडा पर्वत श्रेणियों के पूर्वी संधि स्थल पर मध्यप्रदेश के अमर कंटक नामक स्थान से निकलती है और पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती है। यह मंडला और जबलपुर से होकर गुजरती है। मंडला के बाद उत्तर की ओर एक संकरा चाप बनाती हुई यह जबलपुर की ओर मुड़ जाती है। इसके बाद ऊँचे धुँआधार नामक प्रपात को पार कर यह एक संकरे मार्ग से होकर बहती है तथा जलोढ़ मिट्टी के उर्वर मैदान में प्रवेश करती है, जिसे ''नर्मदा घाटी'' कहते हैं। यह घाटी विंध्य और सतपुडा पहाड़ियों के मध्य में स्थित है। पहाड़ियों से बाहर आने के बाद पुनः यह खुले मैदान में प्रवेश करती है। इसी स्थान पर आगे ओमकारेश्वर एवं महेश्वर नामक नगर इसके किनारे बसे है। इसके बाद यह भरूच पहुँचकर अंत मे खम्भात की खाड़ी में गिर जाती है।

29. **पंबा नदी** – यह केरल की तीसरी सबसे बड़ी नदी है। इसका उद्‌गम पीरमेडू पठार में है। यह नदी पांच नदियों–पंबाआर, काकीआर, अरूंधईआर, ककदआर और कालीआर के संगम से बनी है। पंबा अपनी सहायक नदी काकीआर को अपने में मिलाने के बाद पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती हुई अरूंधईआर को अपने में विलीन कर लेती है। यहां से यह अपनी दिशा बदलकर दक्षिण–पूर्व में नारायणमुझी के पास ककदआर को अपने में विलीन कर लेती है इस संगम से पंबा दक्षिण दिशा में बंदाभीकारा तक बहती है। यहां पर कालीआर नदी इसमें मिल जाती है। अंत में पंबा उत्तर दिशा की ओर बहती हुई बेबानाद झील में प्रवेश कर जाती है।

30. **पार्वती नदी** – यह नदी मध्य प्रदेश की विंध्याचल पर्वतमाला के पश्चिमी श्रेणियों से निकलकर ग्वालियर मध्य प्रदेश में बहती हुई सिंध में मिल जाती है। पार्वती–सिंध संगम पर प्राचीन काल की प्रसिद्ध नगरी पद्मावती बसी हुई थी। यह राजस्थान व मध्य प्रदेश की सीमा बनाते हुए बाँरा जिले में राजस्थान में प्रवेश करती है तथा बाँरा व कोटा जिलों में बहने के बाद पॉली गाँव (सवाई माधोपुरा) के निकट चंबल नदी में मिल जाती है।

31. **पुनपुन नदी** – यह नदी दक्षिण बिहार की एक बरसाती नदी है। इसका उद्‌गम मध्य प्रदेश के पठारी भाग में है। मोरहर और दरधा नामक सहायक नदियों को अपने में मिलाने के बाद पुनपुन पटना पहुँचती है। फिर फतुहा नामक स्थान पर यह गंगा में मिल जाती हैं।

32. **पेरियार नदी** – पेरियार केरल की दूसरी बड़ी नदी है। यह नदी देवीकुलम के दक्षिण में स्थित पहाड़ी चोटी 'शिवगिरि' के करीब से निकलती है। पहाड़ी ढ़लानों से नीचे की ओर तेज गति से बहती हुई पश्चिम दिशा में मुड़ जाती है। एक रेतीले इलाके से गुजरने के बाद इसकी धारा 'बेडिपेरियार' नामक स्थान के पास एक गहरी घाटी में प्रवेश करती है। इस घाटी से निकलने के बाद इसमें पेर–मथुरा नदी का विलेय हो जाता है। मलयतूर से बहती हुई यह जब अलवाई पहुँचती है तो इसका दो धाराओं में

विभाजन हो जाता है। एक धारा चालकुडी नदी में मिल जाती है तथा दूसरी बेरापुझा के पास बेबानाद नामक झील में विलीन हो जाती है।

33. **पेन्नार नदी** – यह नदी कर्नाटक राज्य के नंदी दुर्ग पहाड़ी से निकलती है पेन्नार कर्नाटक राज्य से आंध्र प्रदेष में प्रवेश करती है। पुन्नाबलम के पास इसकी धारा पूर्व की ओर उन्मुख हो जाती है। आगे चलकर चित्रा नदी का इसमें विलेय हो जाता है। गंडिकोटा की संकरी घाटी में प्रवाहित होकर जम्मालामडगू नामक नगर में प्रवेश करती है। पेन्नार दक्षिण–पूर्व दिशा में नल्लामला की पहाड़ियों को काटती हुई प्रवाहित हुई है। सांगिलेख नदी को अपने में मिलाने के बाद यह पूर्व दिशा की ओर मुड जाती है। ब्योनपल्ली के पास पियास नदी का इसमें विलेय हो जाता है। अंत में यह संगम एनीकर और बेल्लोर एनीकर से प्रवाहित होती हुई बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाती है।

34. **बागमती नदी** – इस नदी का उद्‌गम स्थल हिमालय की महाभारत श्रेणी में है। यह आरंभ में नेपाल से होकर बहती है। नेपाल से बिहार की सीमा में प्रवेश करती है। यह नदी अपना प्रवाह पथ बदलती है।

35. **ब्रह्मणी नदी** – इसका उद्‌गम बिहार के रांची जिले के नागरी गांव के पास है। आरम्भ मे यह उत्तर–पूर्व की ओर बहती है। उसके बाद दक्षिण में यात्रा करके यह मनोहरपुर पहुँचती है। फिर दक्षिण पश्चिम की ओर बहती हुई यह राउरकेला में प्रवेश कर जाती है। जहां इसमें दाई ओर शेख नदी मिलती है। दक्षिणी–पूर्व की यात्रा तय करती हुई अपनी सहायक नदी टिकरा को अपने में विलीन करने के बाद यह पूर्व की ओर रूख करती है तथा 'बीलर टापू' के करीब बंगाल की खाड़ी में गिर जाती हैं।

36. **ब्रह्मपुत्र नदी** – ब्रह्मपुत्र का उद्‌गम तिब्बत के दक्षिण में मानसरोवर के निकट चेमायुंग दुंग नामक हिमवाह से हुआ है। दक्षिण तिब्बत तक बहती हुई इस नदी का प्रवेश असम राज्य में होता है। डिब्रूगढ़ पहुँचने से पहले इसमें डिब्रू नदी का विलेय हो जाता हैं। ब्रह्मपुत्र जब रंगपुर जिले में प्रवेश करती है तो इसमें तिस्ता नदी का विलेय हो जाता है। गोलांदो के पास ब्रह्मपुत्र की धारा गंगा से मिल जाती है। तब इनका सम्मिलित नाम 'पद्‌मा' हो जाता है। आगे इसमें मेघना नदी का विलेय हो जाता है। इस संगम के बाद मेघना और ब्रह्मपुत्र विशाल मुहाना बनाती हुई बंगाल की खाड़ी में जा गिरती हैं।

37. **बनास नदी** – बनास नदी का उद्‌गम स्थल खमनौर जिला राजसमन्द की अरावली रेंज है। इसका प्रवाह उत्तरी राजस्थान की ओर है, यह सवाई माधोपुर, जिले के रामेश्वर गांव के पास चंबल नदी में विलीन हो जाती है।

38. **बराकर नदी** – यह दामोदर नदी की मुख्य सहायक नदी है। यह हजारी बाग (झारखंड) में पद्‌मा से निकलती है तथा यह छोटा नागपुर पठार के उत्तरी भाग में बहती हुई डिसरगढ़, वर्दमान जिला (पश्चिम बंगाल) में दामोदर नदी में मिल जाती हैं।

39. **बेतवा नदी** – यह मध्य प्रदेश में भोपाल से निकल कर उत्तर–पूर्वी दिशा में बहती हुई भोपाल, विदिशा, झांसी, जालौल आदि जिलों से बहती है। यह हमीरपुर (उत्तर प्रदेश) के निकट यमुना में मिल जाती है।

40. **ब्यास नदी** – यह उत्तर भारत की एक नदी है यह हिमाचल प्रदेश में हिमालय से निकलती हैं तथा पंजाब राज्य में सतलुज नदी में इसका विलेय हो जाता है।

41. **बकुलाही नदी** – बकुलाही नदी का उद्‌गम उत्तर–प्रदेश के रायबरेली जिला के भरतपुर झील से हुआ है वहां से चलते हुए यह नदी बैंती झील, मांझी झील, कालाकांकर झील से जल ग्रहण करते हुए बड़ी नदी का स्वरूप प्राप्त कर लेती है। प्रतापगढ़ के दक्षिण में स्थित मान्धाता ब्लॉक को हरा भरा करते हुए यह नदी आगे जाकर खजुरनी गांव के पास गोमती नदी की सहायक नदी में मिल जाती है।

42. **भागीरथी नदी** – भागीरथी गोमुख स्थान से गंगोत्री हिमनद से निकलती है। भागीरथी व अलकनंदा देवप्रयाग में संगम करती है जिसके पश्चात् वह गंगा के रूप में पहचानी जाती है।

43. **महानदी नदी** – इस नदी का उद्‌गम मध्य प्रदेश के रायपुर जिले के सिहावा नामक पर्वत श्रेणी से हुआ है। सिहावा से निकलकर राजिम में यह पैरी और सोदुल नदियों के जल को ग्रहण करती है। संबलपुर जिले में प्रवेश लेकर महानदी छत्तीसगढ़ से विदा लेती है और दक्षिण की और बहती हुई सोनापुर पहुँचती है और अंत में बंगाल की खाड़ी मे गिर जाती है।

44. **महानंदा नदी** – यह नदी पश्चिम बंगाल की महालिदरन पहाड़ी से निकली है। जो दार्जिलिंग जिले में है। आंरभ में यह पहाड़ियों में बहती है तत्पश्चात् दक्षिण–पश्चिम दिशा में बांग्लादेश और भारत की सीमा रेखा बनाती हुई बहती है। दक्षिण में भारत की सीमा पर बहते हुए गोदागिरि नामक स्थान पर इसका पद्‌मा (गंगा) नदी में विलेय हो जाता हैं।

45. **माही नदी** – यह नदी मध्यप्रदेश के धार जिले के सरदारपुर नामक गांव के पास से निकलती है। इसमें बगोरी नदी का विलेय हो जाता है। इसके संगम के बाद माही पश्चिम दिशा की ओर रूख करती है। उत्तर की ओर बहकर यह अंबापारा के निकट, राजस्थान में प्रवेश कर जाती है। फिर यह गुजरात राज्य में प्रवेश करती है और दक्षिण–पश्चिम दिशा में बहती हुई खंभात की खाड़ी में गिर जाती हैं।

46. **मांडवी नदी** – यह नदी कर्नाटक राज्य के बेलगांव जिले से निकलती है। इसकी उद्‌गम सोन सागर से उत्तर–पूर्व में 600 मी. की ऊँचाई पर है। यह पणजी के पास अरब सागर में विलीन हो जाती है।

47. **मूसी नदी** – मूसी नदी कृष्णा नदी की सहायक नदी है। जिसकी लंबाई 78 कि.मी. है।

48. **मुला नदी** – मूला, पुणे भारत की एक नदी है। जिसका उद्‌गम स्थल मुलसी डैम है और बहती हुई मूठा नदी में मिल जाती हैं।

49. **मूठा नदी** – मूठा, पश्चिम महाराष्ट्र भारत की नदी है। यह पश्चिमी घाट से निकलती है और पुणे, भारत में मूला नदी में मिल जाती हैं। फिर भीमा नदी में मिल जाती है।

50. **भीमा नदी** – इसका उद्‌गम स्थल भारत के महारष्ट्र राज्य के सहयाद्रि के पश्चिम घाट के भीमाशंकर पहाड़ी से हुआ है। भीमा दक्षिण में बहती हैं। भीमा कृणा नदी की

मुख्य सहायक नदी है। भीमा की दक्षिण यात्रा में अनेक सहायक नदियां इसमें मिल जाती है। रायचूर के उत्तर में कर्नाटक और आंध्र प्रदेश की सीमा रेखा पर भीमा कृष्णा नदी में विलीन हो जाती हैं।

51. **यमुना नदी** – यमुना का उद्‌गम स्थान हिमालय के हिमाच्छादित श्रृंग बंदरपुच्छ उत्तर–पश्चिम में स्थित कालिंद पर्वत है, जिसके नाम पर यमुना को कालिंदी भी कहा जाता है। उपने उद्‌गम से आगे विशाल हीमगारों और हिंममंडित कंदराओं में अप्रकट रूप से बहती हुई इसकी धारा यमुनोत्री पर्वत से प्रकट होती है। टोंस यमुना की बड़ी सहायक नदी है। जिसका विलेय यमुना में कालसी के पास होता है। वहां से कई मील तक दक्षिण पश्चिम की ओर बहती हुई तथा उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा की सीमा के सहारे उत्तरी सहारनपुर पहुँचती है। फिर यह दिल्ली, आगरा से होती हुई इलाहाबाद में गंगा नदी से मिल जाती हैं।

52. **रामगंगा नदी** – यह लघु हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं से निकलती है। यह उत्तराखंड के हिमालय श्रेणी के दक्षिण भाग से नैनीताल के निकट से निकलती है। यह पहाड़ी यात्रा करके कालागढ़ जिले के निकट बिजनौर जिले के मैदानों में उतरती है। मैदानी यात्रा के उपरोक्त कोह नदी इसमें मिल जाती है। कार्बेट पार्क के करीब फतेहगढ़ जिले में यह कन्नौज के पास गंगा में विलीन हो जाती हैं।

53. **रावी नदी** – रावी नदी कुल्लु से निकलती है। यह लगभग 380 कि.मी. की यात्रा भारत में तय करके अमृतसर के आगे लाहौर के करीब पाकिस्तान में प्रवेश कर जाती है।

54. **रिहंद नदी** – यह हजारी बाग पर्वत श्रृंखला की मनिपाल पहाड़ी से निकलती है। यह मध्य प्रदेश के उत्तर पूर्वी क्षेत्र सरगुजा से प्रवाहित होती हुई उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में प्रवेश करती है। यहां से लगभग कई मील की यात्रा तय करने के बाद इसका विलेय सिंधुरिया नामक स्थान पर सोन नदी में हो जाता हैं।

55. **लूनी नदी** – यह नदी राजस्थान के नामोर जिले के पिलवा गांव से निकलती है। यह नदी दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में प्रवाहित होते हुए कच्छ के रन (गुजरात) में आकर मिलती हैं।

56. **वैतरणी नदी** – यह नदी उड़ीसा के व्योंसार जिले से निकली है। आरंभ में यह उत्तर दिशा की ओर बहती है। उसके बाद यह दक्षिण पूर्व दिशा में घूम जाती है। जाजपुर पहुँचनें के बाद यह पूरब की ओर रूख करती है और आगे बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

57. **सोन नदी** – सोन नदी या सोन भद्रा भारत के मध्य प्रदेश राज्य के गोंडवाना क्षेत्र में एक पर्वत है – मैकाल। इस पर्वत के पठारी भाग अमरकंटक में ही सोन नदी का उद्‌गम है। यह मध्य प्रदेश राज्य से निकलकर उत्तर प्रदेश, झाारखंड के पहाड़ियों से गुजरते हुए वैशाली जिले के सोनपुर में जाकर गंगा में मिल जाती हैं।

58. **सरस्वती नदी** – सरस्वती नदी पौराणिक हिंदु ग्रंथों तथा ऋग्वेद में वर्णित मुख्य नदियों में से एक है। ऋग्वेद के नदी सूक्त के एक मंत्र में सरस्वती नदी को 'यमुना के पूर्व' और सतलुज के पश्चिम में बहती हुई बताया गया है। उत्तर वैदिक ग्रंथों जैसे ताण्डय और जैमिनीय ब्राह्मण में सरस्वती नदी को मरूस्थल में सूखा बताया गया है।

महाभारत में भी सरस्वती नदी के मरूस्थल में 'विनाशन' नामक जगह पर विलुप्त होने का वर्णन आता है।

59. **सतलुज नदी** – सतलुज नदी का उद्‌गम अस्कर के दरमा दर्रे के पास ऊँचाई पर है। यह कैलास पर्वत के उत्तरी ढ़लान से होकर बहती है। इसके आगे यह नदी अपनी दिशा उत्तर–पश्चिम से बदलकर दक्षिण कर लेती है। रोपड़ के पास से होते हुए यह पंजाब के मैदानी भागों में प्रवेश कर जाती है। तत्पश्चात् पश्चिम में फिरोजपुर होते हुए पाकिस्तान में पहुँचती है यहां इसका विलेय चेनाब नदी में हो जाता हैं।

60. **सावित्री नदी** – यह नदी महाराष्ट्र के वर्धा के पूर्व से निकलती है। यह अपने उद्‌गम से दक्षिण–पश्चिम दिशा में बहती है और देवगढ़ गांव के पास अरब सागर में मिल जाती हैं।

61. **साबरमती नदी** – यह नदी राजस्थान की अरावती श्रेणी की धेबर झील से निकलती है। यह पश्चिम भारत के गुजरात राज्य की प्रमुख नदी हैं। यह सामान्य रूप से दक्षिण–पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती है और अंत में यह अरब सागर की खंबात की खाड़ी में गिर जाती हैं।

62. **सुवर्ण रेखा नदी** – यह भारत के झारखंड प्रदेश में बहने वाली एक पहाड़ी नदी है। यह राँची नगर के दक्षिण–पश्चिम से निकलती है। मानभूम जिले के तीन संगम बिन्दुओं के आगे यह दक्षिण–पूर्व की ओर मुड़ कर सिंहभूम में बहती हुई उत्तर–पश्चिम से मिदनापुर जिले में प्रविष्ट होती है। इस जिले के पश्चिमी भू–भाग के जंगलों में बहती हुई बालेश्वर जिले के बालेश्वर नामक स्थान पर बंगाल की खाड़ी में मिल जाती हैं।

63. **सिंधु नदी** – सिंधु नदी उत्तर भारत की तीन बड़ी नदियों में से एक है। इसका उद्‌गम वृहद हिमालय में मानसरोवर से उत्तर में सेगेखबब के स्रोतों में हैं। अपने उद्‌गम से निकलकर तिब्बती पठार की चौड़ी घाटी में से होकर, कश्मीर की सीमा को पार कर, दक्षिण–पश्चिम में पाकिस्तान के रेगिस्तान और सिंचित भू–भाग में बहती हुई करॉची के दक्षिण में अरब सागर में गिरती है। सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में से एक प्रमुख सभ्यता थी।

64. **सोन नदी** – सोन नदी या सोनभद्र नदी भारत के मध्य प्रदेश राज्य से निकलकर उत्तर प्रदेश, झारखंड के पहाडियों से गुजरते हए वैशाली जिले के सोनपुर में जाकर गंगा नदी से मिल जाती हैं। इसका उद्‌गम स्थल मध्य प्रदेश के अमरकंटक नामक स्थान से हुआ है। गंगा और सोन नदी के संगम पर सोनपुर में एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला लगता है।

65. **खड़कई नदी** – यह पश्चिमी भारत की नदी है। यह उड़ीसा के मयूरभंज जिले से निकलती है। यह नदी जमशेदपुर के उत्तर पश्चिम में सुवर्ण रेखा नदी में मिल जाती हैं। यह सुर्वण रेखा नदी की मुख्य सहायक नदी है।

66. **बाणगंगा नदी** – यह नदी राजस्थान राज्य के बैराठ गांव जिला जयपुर से निकलती है। यह राजस्थान राज्य के विभिन्न शहरों सवाई, भरतपुर तथा माधोपुर से होकर गुजरती है और अंत में यमुना में मिल जाती हैं।

67. **शारदा नदी** – यह नदी महान हिमालय से निकलती है इसका उद्‌गम स्थल उत्तराखंड राज्य के पिथौरागढ़ जिले के कालापानी स्थान से होता हैं। यह जौल्जिबी में गोरी गंगा तथा पंचेश्वर में सरयु नदी को अपने में मिलाती है। यह नदी भारत और नेपाल की सीमा रेखा बनाती है तथा अंत में घाघरा में मिल जाती है।

68. **शिप्रा नदी** – शिप्रा, मध्य भारत के मध्य प्रदेश में बहने वाली एक प्रसिद्ध और ऐतिहासिक नदी है। इसका उद्‌गम देवास के पास विंध्य रेंज में काकरई बालदेई से हुआ है। यह नदी उत्तर की ओर बहती हुई मालवा पठार में चंबल नदी में मिल जाती है। उज्जैन में कुंभ का मेला इसी नदी के किनारे लगता है।

(विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी के अनुसार)

हिन्दी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है।

राजा राममोहन राय